कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है : देविंदर

पटना (आससे)। चंद्रगुप्त इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट पटना ने 'कृषि प्रौद्योगिकी-नवाचार आधारित खेती में प्रगति' विषय पर एक विशेषज्ञ सत्र का आयोजन किया। आज के कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सह वक्ता देविंदर शर्मा, खाद्य और व्यापार नीति विश्लेषक और एक पुरस्कार विजेता भारतीय पत्रकार, लेखक, विचारक और शोधकर्ता थे। इस अवसर पर सीआईएमपी के निदेशक डॉ. राणा सिंह ने स्वागत भाषण दिया। इंटरैक्टिव सत्र में देविंदर शर्मा ने कहा कि भारत में 50त्न लोग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आजीविका के लिए कृषि से जुड़े हुए हैं। कृषि हमारी भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है लेकिन दुखद वास्तविकता यह है कि कृषि हमारी अर्थव्यवस्था में सबसे कम हिस्सेदारी का योगदान करती है और राजस्व पिरामिड में सबसे नीचे है। इसका कारण यह नहीं है कि कृषि क्षेत्र अक्षम है बल्कि यह उपेक्षित है। हमें इसे प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल से उन्नत बनाने की आवश्यकता है लेकिन ऐसे नवीन तकनीकों को खोजना है जो सतत होने

के साथ-साथ आर्थिक रूप से व्यवहार्य भी हों। उन्होंने कहा कि 1996 में एम एस स्वामीनाथन फाउंडेशन के एक सम्मेलन में विश्व बैंक की एक रिपोर्ट की चर्चा की गई थी जिसमें यह अनुमान लगाया गया था कि वर्ष 2015 तक 40 करोड़ ग्रामीण आबादी शहरी क्षेत्रों में पलायन कर जाएगी। उन्होंने इस बात पर भी प्रकाश डाला कि खाद्यान्न और कृषि उत्पादों की कीमतें हमेशा कम रखी जाती हैं क्योंकि यह पूरी दुनिया में अर्थव्यवस्था के डिजाइन और आर्थिक सुधारों का हिस्सा है। उन्होंने भारतीय किसानों की दुर्दशा, असुरक्षा और आत्महत्या पर प्रकाश डाला, जो हमेशा विकास वक्र में सबसे नीचे हैं, जबकि कृषि-संबद्ध आपूर्तिकर्ता (जैसे उर्वरक कंपनियां) और कृषि-खरीदार (जैसे एफपीओ) भारी मुनाफा कमा रहे हैं। उन्होंने कृषि में उपयोग की जा रही नवीनतम तकनीकों, जैसे ड्रोन तकनीक, का उपयोग करके कीटनाशक स्प्रे, और इसके होने वाले फायदें और नुकसानों के बारे में भी बात की। उन्होंने कहा, थाईलैंड जैसे देश अब किसानों या मनुष्यों की भागीदारी के बिना %रोबो-कृषि% पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। हालांकि, प्रौद्योगिकी अकेले कृषि और इसकी उत्पादकता को बढ़ावा देने में मदद नहीं करती है। उन्होंने अमेरिका, फ्रांस और अन्य यूरोपीय देशों के कुछ मामलों पर प्रकाश डाला जहां कृषि में तकनीकी प्रगति के बावजूद किसान आत्महत्या कर रहे थे और उनका प्रतिशत लगातार घट रहा था। उन्होंने फ़िनलैंड का ज़िक्र किया और बताया की फ़िनलैंड दुनिया का पहला देश है जिसने सिंथेटिक खाद्य फ़ैक्टरी शुरू की है जहाँ कृत्रिम रूप से प्रोटीन से भरपूर भोजन उगाया जा सकता है।

Aaj ! Page No - 05 ! Date - 10-02-2023 !

अब स्टार्टअप को बेहतर माहौल दिया उद्योग विभाग का बी-हब

बी-हब में पहले दिन काम करते स्टार्टअप से जुड़े युवा • जागरण

जागरण संवाददाता, पटना : उद्योग विज्ञान की ओर से राजधानी के मौर्यलोक में विकसित बी-हब राज्य के स्टार्टअप का खूब पसंद आ रहा है। पहले दिन 62 स्टार्टअप ने बी-हब में काम किया। यहां बैठने की व्यवस्था, प्रकाश, पानी एवं कुर्सियां सभी युवाओं को पसंद आ रही है। आरोग्य नाम से स्टार्टअप संचालित करने वाले लोक रंजन के आन्नलाइन दवाओं की आपूर्ति करते हैं। गुरुवार से बी-हब में काम शुरू कर दिया है। बताया कि सरकार की पहल सराहनीय है। शुरू में पैसे का अभाव होता है। ऐसे में कार्यालय का एक अलग से बोझ हो जाता है। अब स्टार्टअप को कार्यालय की चिंता नहीं है।

Dainik Jagran ! Page No - 06 ! Date - 10-02-2023 !

सीआईएमपी में 'कृषि प्रौद्योगिकी-नवाचार आधारित खेती में प्रगति' विषय पर एक सत्र आयोजित

कृषि को प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल से उन्नत बनाने की है आवश्यकता : देविंदर शर्मा

एजुकेशन रिपोर्टर | पटना

चंद्रगुप्त इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट पटना ने 'कृषि प्रौद्योगिकी-नवाचार आधारित खेती में प्रगति' विषय पर एक विशेषज्ञ सत्र का आयोजन किया। मुख्य अतिथि खाद्य और व्यापार नीति विश्लेषक देविंदर शर्मा ने कहा कि भारत में 50% लोग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आजीविका के लिए कृषि से जुड़े हुए हैं। कृषि हमारी भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है लेकिन दुखद वास्तविकता यह है कि कृषि हमारी अर्थव्यवस्था में सबसे कम हिस्सेदारी का योगदान करती है और राजस्व पिरामिड में सबसे नीचे है। इसका कारण यह नहीं है कि कृषि क्षेत्र अक्षम है बल्कि यह उपेक्षित है। हमें इसे प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल से उन्नत बनाने की आवश्यकता है लेकिन ऐसे नवीन तकनीकों को खोजना है जो सतत होने के साथ-साथ आर्थिक रूप से व्यवहारिक भी हो । उन्होंने कहा कि 1996 में एमएस स्वामीनाथन फाउंडेशन के एक सम्मेलन में विश्व बैंक की एक रिपोर्ट की चर्चा की गई थी, जिसमें यह अनुमान लगाया गया था कि वर्ष 2015 तक 40 करोड़ ग्रामीण आबादी शहरी क्षेत्रों में पलायन कर जाएगी। उन्होंने कृषि में उपयोग की जा रही नवीनतम तकनीकों जैसे ड्रोन तकनीक का उपयोग करके कीटनाशक स्प्रे, इसके होने वाले फायदे और नुकसानों के बारे में भी बात की। उन्होंने कहा, "थाईलैंड जैसे देश अब किसानों या मनुष्यों की भागीदारी के बिना 'रोबो-कृषि' पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। हालांकि, प्रौद्योगिकी अकेले कृषि और इसकी उत्पादकता को बढ़ावा देने में मदद नहीं करती है।" उन्होंने अमेरिका, फ्रांस और अन्य यूरोपीय देशों के कुछ मामलों पर प्रकाश डाला जहां कृषि में तकनीकी प्रगति के बावजूद किसान आत्महत्या कर रहे थे।

Dainik Bhaskar ! Page No - 04 ! Date - 10-02-2023 !

सीआईएमपी : कृषि प्रौद्योगिकी-नवाचार आधारित खेती में प्रगति पर विमर्श

पटना। चंद्रगुप्त इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट में कृषि प्रौद्योगिकी-नवाचार आधारित खेती में प्रगति विषय पर एक विशेषज्ञ सत्र आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि सह वक्ता देविंदर शर्मा, खाद्य और व्यापार नीति विश्लेषक थे। इस अवसर पर सीआईएमपी के निदेशक डॉ. राणा सिंह ने स्वागत भाषण दिया। इंटरेक्टिव सत्र में देविंदर शर्मा ने बताया कि भारत में 50 प्रतिशत लोग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आजीविका के लिए कृषि से जुड़े हुए हैं। कृषि हमारी भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। लेकिन वास्तविकता यह है कि अर्थव्यवस्था में कृषि की सबसे कम हिस्सेदारी है। यह राजस्व पिरामिड में सबसे नीचे है। उन्होंने 1996 में एमएस स्वामीनाथन फाउंडेशन के एक सम्मेलने में विश्व बैंक की एक रिपोर्ट की चर्चा की गई थी। जिसमें यह अनुमान लगाया गया था कि वर्ष 2015 तक 40 करोड़ ग्रामीण आबादी शहरी क्षेत्रों में पलायन कर जाएगी। उन्होंने भारतीय किसानों की दुर्दशा, असुरक्षा और आत्महत्या पर प्रकाश डाला। उन्होंने कृषि में उपयोग की जा रही नवीनतम तकनीकों जैसे ड्रोन तकनीक का उपयोग करके कीटनाशक स्प्रे तथा इसके होने वाले फायदे और नुकसानों के बारे में भी बात की। उन्होंने कहा कि थाईलैंड जैसे देश अब किसानों या मनुष्यों की भागीदारी के बिना रोबो-कृषि पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। हालांकि, प्रौद्योगिकी अकेले कृषि और इसकी उत्पादकता को बढ़ावा देने में मदद नहीं करती है। उन्होंने अमेरिका, फ्रांस और अन्य यूरोपीय देशों के कुछ मामलों पर प्रकाश डाला जहां कृषि में तकनीकी प्रगति के बावजूद किसान आत्महत्या कर रहे थे। अब उनका प्रतिशत लगातार घट रहा था। उन्होंने फिनलैंड का जिक्र किया और बताया की फिनलैंड दुनिया का पहला देश है जिसने सिंथेटिक खाद्य फैक्टरी शुरू की है। जहां कृत्रिम रूप से प्रोटीन से भरपूर भोजन उगाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि समय की आवश्यकता कृषि क्रांति 4.0 में जाने की है, जहां फोकस पूरी तरह से जैविक खेती पर हो।

Rashtriya Sahara ! Page No - 04 ! Date - 10-02-2023 !